



0851CH15

पञ्चदशः पाठः



प्रहेलिका:

[पहेलियाँ मनोरञ्जन की प्राचीन विधा है। ये प्रायः विश्व की सारी भाषाओं में उपलब्ध हैं। संस्कृत के कवियों ने इस परम्परा को अत्यन्त समृद्ध किया है। पहेलियाँ जहाँ हमें आनन्द देती हैं, वहीं समझ-बूझ की हमारी मानसिक व बौद्धिक प्रक्रिया को तीव्रतर बनाती हैं। इस पाठ में संस्कृत प्रहेलिका (पहेली) बूझने की परम्परा के कुछ रोचक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।]

कस्तूरी जायते कस्मात्?
को हन्ति करिणां कुलम्?
किं कुर्यात् कातरो युद्धे?
मृगात् सिंहः पलायते ॥1॥

सीमन्तिनीषु का शान्ता?
राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः?
विद्वद्भिः का सदा वन्धा?
अत्रैवोक्तं न बुध्यते ॥2॥

कं सञ्जघान कृष्णः?
का शीतलवाहिनी गङ्गा?
के दारपोषणरताः?
कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ॥3॥

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः
त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्‌वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी
जलं च बिभ्रन्त घटो न मेघः ॥4॥

भोजनात्ते च किं पेयम्?
 जयन्तः कस्य वै सुतः?
 कथं विष्णुपदं प्रोक्तम्?
 तत्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥५॥

प्रहेलिकानामुत्तरान्वेषणाय सङ्केताः

- | | | |
|----------------------------|---|--|
| प्रथमा प्रहेलिका | - | अन्तिमे चरणे क्रमशः त्रयाणां प्रश्नानां त्रिभिः पैदैः उत्तरं दत्तम्। |
| द्वितीया प्रहेलिका | - | प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चरणेषु प्रथमस्य वर्णस्य अन्तिमवर्णेन संयोगात् उत्तरं प्राप्यते। |
| तृतीया प्रहेलिका | - | प्रतिऽचरणे प्रथमद्वितीययोः प्रथमत्रयाणां वा वर्णानां संयोगात् तस्मिन् चरणे प्रस्तुतस्य प्रश्नस्य उत्तरं प्राप्यते। |
| चतुर्थप्रहेलिकायाः उत्तरम् | - | नारिकेलफलम्। |
| पञ्चमप्रहेलिकायाः उत्तरम् | - | प्रथम-प्रहेलिकावत्। |



| | | |
|----------------------|---|----------------|
| हन्ति | - | मारता/मारती है |
| कातरः | - | कमजोर |
| सीमन्तिनीषु | - | नारियों में |
| कोऽभूत् (कः+अभूत्) | - | कौन हुआ |
| सञ्जघान | - | मारा |
| कंसञ्जघान (कंस+जघान) | - | कंस को मारा |
| शीतलवाहिनी | - | ठंडी धारा वाली |

प्रहेलिका:

111

| | | |
|--|---|---------------------------------|
| काशीतलवाहिनी | - | काशी की भूमि पर बहने वाली |
| दारपोषणरता: | - | पत्नी के पोषण में संलग्न |
| केदारपोषणरता: | - | खेत के कार्य में संलग्न |
| कंबलवन्तम् | - | वह व्यक्ति जिसके पास कंबल है |
| वृक्षाग्रवासी (वृक्ष+अग्रवासी) | - | पेड़ के ऊपर रहने वाला |
| पक्षिराजः | - | पक्षियों का राजा (गरुड़) |
| त्रिनेत्रधारी | - | तीन नेत्रों वाला (शिव) |
| शूलपाणिः | - | जिनके हाथ में त्रिशूल है (शंकर) |
| त्वग् | - | त्वचा, छाल |
| बिभ्रन् | - | धारण करता हुआ |
| विष्णुपदम् | - | स्वर्ग, मोक्ष |
| तक्रम् | - | छाछ, मठा |
| शक्रस्य | - | इन्द्र का |

अभ्यासः



1. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) सीमन्तिनीषु का राजा गुणोत्तमः।
 (ख) कं सञ्जघान का गङ्गा?
 (ग) के कं न बाधते शीतम्॥
 (घ) वृक्षाग्रवासी न च न च शूलपाणिः।

2. श्लोकांशान् योजयत-

क

किं कुर्यात् कातरो युद्धे

ख

अत्रैवोक्तं न बुध्यते।

विद्वद्भिः का सदा वन्द्या
कं सञ्जघान कृष्णः
कथं विष्णुपदं प्रोक्तं

तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।
मृगात् सिंहः पलायते।
काशीतलवाहिनी गङ्गा।

3. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं न इति लिखत-

यथा- सिंहः करिणां कुलं हन्ति।

आम्

- (क) कातरो युद्धे युद्ध्यते।
- (ख) कस्तूरी मृगात् जायते।
- (ग) मृगात् सिंहः पलायते।
- (घ) कंसः जघान कृष्णम्।
- (ङ) तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।
- (च) जयन्तः कृष्णस्य पुत्रः।

4. सन्धिविच्छेदं पूरयत-

| | | | | |
|----------------------|---|-------|---|-------|
| (क) करिणां कुलम् | - | | + | |
| (ख) कोऽभूत् | - | | + | |
| (ग) अत्रैवोक्तम् | - | | + | |
| (घ) वृक्षाग्रवासी | - | | + | |
| (ङ) त्वग्रवस्त्रधारी | - | | + | |
| (च) बिभ्रन् | - | | + | |

5. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनज्ञ लिखत-

पदानि

लिङ्गम्

विभक्तिः

वचनम्

यथा- करिणाम्

पुँलिङ्गम्

षष्ठी

बहुवचनम्

प्रहेलिका:

113

| | | | |
|-------------|-------|-------|-------|
| कस्तूरी | | | |
| युद्धे | | | |
| सीमन्तिनीषु | | | |
| बलवन्तम् | | | |
| शूलपाणिः | | | |
| शक्रस्य | | | |

6. (अ) विलोमपदानि योजयत-

| | |
|---------|------------|
| जायते | शान्ता |
| वीरः | पलायते |
| अशान्ता | प्रियते |
| मूर्खैः | कातरः |
| अत्रैव | विद्वद्भिः |
| आगच्छति | तत्रैव |

(आ) समानार्थकपदं चित्वा लिखत-

- (क) करिणाम्। (अश्वानाम्/गजानाम्/गर्दभानाम्)
- (ख) अभूत्। (अचलत्/अहसत्/अभवत्)
- (ग) वन्द्या। (वन्दनीया/स्मरणीया/कर्तनीया)
- (घ) बुध्यते। (लिख्यते/अवगम्यते/पठ्यते)
- (ङ) घटः। (तडागः/नलः/कुम्भः)
- (च) सञ्जघान। (अमारयत्/अखादत्/अपिबत्)

7. कोष्ठकान्तर्गतानां पदानामुपयुक्तविभक्तिप्रयोगेन अनुच्छेदं पूर्यत-

एकः काकः (आकाश) डयमानः आसीत्। तृष्णार्तः सः (जल) अन्वेषणं करोति। तदा सः (घट) अत्यं (जल) पश्यति। सः (उपल) आनीय (घट) पातयति। जलं (घट) उपरि आगच्छति। (काक) सानन्दं जलं पीत्वा तृप्यति।

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में दी गयी पहेलियों के अतिरिक्त कुछ अन्य पहेलियाँ अधोलिखित हैं। उन्हें पढ़कर स्वयं समझने की कोशिश करें और ज्ञानवर्धन करें यदि न समझ पायें तो उत्तर देखें।

(क) चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः।
महान् बलिष्ठो न च भीमसेनः।
स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि
सीतावियोगी न च रामचन्द्रः॥

(ख) न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद्॥

(ग) अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

उत्तर-(क) वृषभः, (ख) नयनम्, (ग) पत्रम्



प्रहेलिका: